एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरीफ दलहनी फसलों के प्रमुख रोग व कीट तथा नियंत्रण

(*चंद्र सिंह चौधरी)
कृषि पर्यवेक्षक, कृषि विभाग, राजस्थान सरकार
*संवादी लेखक का ईमेल पता: cschoudhary8656@gmail.com

राजस्थान में खरीफ दलहनी फसलों के अर्न्तगत लगभग 72 प्रतिशत क्षेत्र दौसा, जयपुर, झुन्झुनु, सीकर, नागौर, जोधपुर, बीकानेर और चुरू आदि जिलों में स्थित है। मूंग, मोठ, चंवला तथा उडद मुख्य दलहनी फसलें है। जिनको शुष्क एंव अर्द्धशुष्क जलवायु वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक बोया जा सकता है। इनको अधिक तापमान कम आर्द्रता एंव मध्यम वर्षा (लगभग 60 से 80 से.मी. वार्षिक वर्षा) में आसानी सें पैदा किया जा सकता है। वर्षा ऋतु की फसल होने के कारण खरीफ फसलों में कीट एंव व्याधियों का प्रकोप अधिक होता है। जिनमें जड़ गलन, बैक्टीरियल ब्लाइट तथा पीतशिरा मोजेक प्रमुख रोग है तथा मोयला, हरा तेला, सफेद मक्खी, फली छेदक व कातरा प्रमुख कीट है। अतः स्वस्थ फसल प्राप्त करने के लिए हमें फसलों को बोने से पूर्व फंफूदनाशक, कीटनाशक एवं जीवाणु कल्चर के क्रम में ही बीजोपचार करना चाहिए, यह एक सरल, सस्ता एंव कम मेहनत वाला उपाय है।

बीजोपचारः– खरीफ दलहनी फसलों में जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतु बीज को बुवाई से पूर्व 1 ग्राम कार्बेण्डेजिम व 1 ग्राम थाइरम फफूँदीनाशी या 6 से 8 ग्राम ट्राईकोडरमा मित्र फफूंद प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। अंगमारी रोग की रोकथाम हेतु बीज को 250 पीपीएम एग्रीमाईसिन या 100 पीपीएम स्ट्रेप्टोसाईक्लिन के घोल में 3 से 5 घण्टे भिगोकर उपचारित करें। अन्त में राइजोबियम कल्चर तथा पी.एस.बी. कल्चर से भी उपचारित कर बुवाई करनी चाहिए क्योंकि दलहनी फसलों की गांठो में राइजोबियम के जीवाणु वायुमण्डल की अनुपयोगी नत्रजन को उपयोगी नत्रजन में परिवर्तित करते है ताकि पौधे आसानी से ग्रहण कर सकें।

प्रमुख व्याधियाँ तथा उनका नियंत्रण–

1. **जड गलन रोगः–** इस रोग का प्रकोप खरीफ दालों के पौधें के जड़ क्षेत्र में होता है जिससे जड़ें काली होकर गलनें लगती है। इस रोग के नियंत्रण हेतु बीज को 1 ग्राम कार्बेण्डेजिम +1 ग्राम थाइरम फफूँदीनाशी या 6 से 8 ग्राम ट्राईकोडरमा मित्र फफूंद प्रति किलों बीज दर से उपचारित करके ही बुवाई करें।
2. **पीत शिरा मोजेक विषाणु रोग–** इस रोग में पत्ती की शिराओं के मध्य का रंग पीला हो जाता है यह रोग रस चूसने वाले कीटों से फैलता है, नियन्त्रण के लिए बुवाई समय से करनी चाहिए तथा मौजेक लगे पौधे को तुरन्त उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। रोग का प्रकोप दिखते ही डायमिथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू एस सी की एक लीटर मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। छिड़काव कर देने से मौजैक का प्रकोप समाप्त हो जाता हैं।
3. **चित्ती जीवाणु/बैक्टीरियल ब्लाइट रोग** – इसकी रोकथाम हेतु 400 लीटर पानी में 20 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लिन या दो किलों ताम्रयुक्त कवक नाशी (कॉपर आक्सीक्लोराइड) का प्रति हैक्टर की दर सें छिड़काव करे।
4. **पीलीया रोग** – फसलों में पतियों पर पीलापन दिखाई देते ही 0.1 प्रतिशत गधंक का तेजाब या 0.5 प्रतिशत फैरस सल्फेट (सुहागा) का छिड़काव करें।

5. **तना झुलसा रोग** – इस रोग का प्रकोप पौधे के तनो पर जले हुए की तरह लक्षण दिखाई देते है। इस रोग का प्रकोप दिखाई देते ही तांबायुक्त फफूंदनाशी मैन्कोजेब 2 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
6. **छाछया रोग (पाउडरी मिल्डयू)** – इस रोग में पतियों की ऊपरी सतह पर शुरू में सफेद गोलाकार पाउडर जैसे धब्बे हो जाते है तथा बाद में पाउडर सारे तने तथा पतियों पर फैल जाता है। इसकी रोकथाम के लिए प्रति हैक्टेयर 2.5 किलो घुलनशील गंधक अथवा कैरोथेन एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें एंव दुसरा छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर दोहरावें अथवा 25 किलों गन्धक चूर्ण का प्रति हैक्टर भुरकाव करें।

छाछया रोग (पाउडरी मिल्डयू)

चित्ती जीवाणु/बैक्टीरियल ब्लाइट रोग

पित शिरा मोजेक विषाणु रोग

जड गलन रोग

खरीफ दलहनी फसलों की प्रमुख व्याधियाँ

प्रमुख कीट तथा उनका नियंत्रण–

1. **कातरा** – इस कीट की लट वाली अवस्था ही फसलों को नुकसान करती है। इसके पंतगों का नियन्त्रण प्रकाश पाश लगाकर या खेंतो में रात के समय जगह–जख्राह कचरा जलाकर करें। कातरे की लट की रोकथाम के लिए छोटी अवस्था में मिथाइल पेराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किग्रा प्रति है, की दर से भुरकाव करें। बड़ी अवस्था में जहां पानी की सुविधा है वहां मिथाइल पेराथियॉन 50 ई.सी. 750 मिलीलीटर या क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी एक लीटर प्रति है की दर से छिड़काव करें।
2. **फली छेदक** – खरीफ दलहनों में इस कीट के नियंत्रण हेतु मेलाथियॉन 50 ईसी या क्यूरालफॉस 25 ईसी एक लीटर प्रति है. की दर से फूल व फली आते ही छिड़काये। आवश्यकता हो तो हर 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव/भुरकाव दोहरावें।

फली छेदक

कातरा

सफेद मक्खी	हरा तेला
खरीफ दलहनी फसलों की प्रमुख कीट	

3. **मोयला, हरा तेला व सफेद मक्खी** – यह कीट खरीफ फसलों में पौधे की पतियों, तना, शाखाओं का रस चूसकर पौधे को कमजोर बना देता है। शिशु या प्रौढ कीट पत्तियों एवं फूलों के रस को चूसते हैं इससे पतियॉ मुड़ जाती है और फूल गिर जाते हैं जिससे उपज कम होती है।

नियंत्रण – मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति है. कि दर से राख में मिलाकर भुरकाव या मैलाथियान 50 ई.सी. या मोनोक्रोटोफाफस 36 डब्ल्यूएससी या डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद छिड़काव दोहरावें।